सतत विकास और आजीविका के लिए वानिकी प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पर रिपोर्ट

Report on One Day Training Program on Forestry Technology for Sustainable Development and Livelihoods

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से 10 सितम्बर, 2023 को केलांग, लाहौल और स्पीति में वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों ने लिए सतत विकास और आजीविका के लिए वानिकी प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान ने डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला, डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक, श्री अनिकेत वनवे, डीएफओ, केलांग, लौहल एवं स्पीति, डॉ. पीताम्बर सिंह, वैज्ञानिक एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यकर्म की रूपरेखा बताई । उन्होनें बताया कि डीएफओ, केलांग, लौहल एवं स्पीति, के आग्रह पर संस्थान ने वन विभाग के कर्मचारियों को जूनिपर, भोजपत्र और बियुंस की बीज कलेक्शन तकनीक एवं उसकी नर्सरी के बारे में ट्रेनिंग दे रहा है । श्री अनिकेत ने कहा कि लाहौल वन विभाग की नर्सरीयां अलग-अलग भौगोलिक स्थान पर हैं, अतः उनके अनुरूप जूनिपर उगाने की उचित तकनीक बताने का भी आग्रह किया । उन्होंने लाहौल में अरबोरेटम स्थापित करने की आवश्यकता बताई और कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान इसमें वन विभाग को तकनीकी सहायता दे । उन्होंने विलो मोर्टालिटी के बारे में भी चिंता जाहिर की । डॉ संदीप शर्मा, निदेशक ने बताया कि संस्थान द्वारा भी सैलिक्स में पिछले दो दशकों से मोर्टालिटी देखी जा रही है, इसके विभिन्न कारण हैं । संस्थान इस प्रजाति की रोग प्रतिरोधक नई प्रजातियां विकसित करने पर काम कर रहा है और आशा जताई कि आने वाले समय में यह नई प्रजातियां विकसित होगी । डॉ . शर्मा ने बताया कि उनका संस्थान वन मंडल लाहौल में अरबोरेटम स्थापित एवं विकसित करने के लिए वन विभाग को पूर्ण तकनीकी सहयोग करेगा । उन्होंने ट्रान्स हिमालय की जूनिपर एवं अन्य पौधे एवं झाड़ियों का अरबोरेटम स्थापित करने का सुझाव दिया । डॉ. शर्मा ने उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी और वृक्षारोपण तकनीक विषय पर जानकारी साझा की । उन्होंने बताया कि पौधरोपण की सफलता के लिए सही और स्वस्थ पौध का चयन और पौधरोपण तकनीक बहुत महत्वपूर्ण होती है । डॉ. पीताम्बर सिंह, वैज्ञानिक ने जूनिपेरस पॉलीकार्पस (शुक्पा) एवं भोजपत्र की नर्सरी और पौधारोपण तकनीक पर प्रस्तुति दी और शीत मरुस्थल के महत्वपूर्ण वृक्ष शुक्पा का महत्व बताया । उन्होंने कहा कि जूनिपेरस पॉलीकार्पस मूल रूप से हिमाचल प्रदेश और लद्दाख के आंतरिक शुष्क एवं शीत मरुस्थल क्षेत्र में पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश में इसके वन 210 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है । शुक्पा शीत मरुस्थल की पारिस्थितिकी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । इन क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों द्वारा विभिन्न धार्मिक संस्कारों को करने के लिए शुक्पा की पत्तियों का मंदिरों और मठों में धूप के रूप में उपयोग किया जाता है । उन्होंने बताया कि इसकी नर्सरी तकनीक उपलब्ध नहीं थी, उनके संस्थान ने इस पर शोध किया और इसकी पहली बार नर्सरी विकसित कर हजारों पौधे विकसित किए और हितधारकों को बांटें गए । प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हिमाचल प्रदेश एवं लद्दाख वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों और किसानों को शुक्पा की नर्सरी तकनीक सिखाई गई है । इसके अलावा उन्होनें भोजपत्र की बीज और वर्धन तकनीक के बारे में भी बताया । डॉ. जगदीश

सिंह, वैज्ञानिक ने 'विविधीकरण और सतत आय सृजन के लिए महत्वपूर्ण शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती' विषय पर व्याख्यान दिया । उन्होनें बताया कि किसान औषधीय पौधों को बागबानी फसलों के मध्य उगाकर अतिरिक्त आय कमा सकते हैं । डॉ. जोगिंद्र चौहान ने छरमा, फ्रैक्सीनस (थुंब) का शीत मरुस्थल में पारिस्थितिकी के महत्व के बारे में जानकारी दी । इसके अलावा उन्होंने भारत सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाए जा रहे मिशन लाइफ के बारे में अवगत करवाया और कर्मचारियों को लोगों के मध्य जागरूकता लाने का सुझाव दिया । वन विभाग के कर्मचारियों ने नर्सरी उगाने में आ रही विभिन्न दिक्कतों के बारे में वैज्ञानिकों को अवगत करवाया । जिसमें देवदार और कायल के बीज न उगने की दिक्कत बताई । इस पर डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि इसके लिए जरूरी है कि स्वस्थ और ताजा एकत्रित किए बीज नवंबर दिसंबर माह में बीजे जाए । फफूंद से बचाने के लिए नर्सरी में फफूंदनाशक से मिट्टी को उपचारित करे । क्योंकि संक्रमित बीज नहीं उगते । श्री अनिकेत, डीएफओ लाहौल ने कहा कि लाहौल वन मंडल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की मदद से इस साल जूनिपर, भोजपत्र और मैपल के पौधों को नर्सरी में उगाना शुरू करेंगे । इन पौधों को प्राकृतिक कठिनाइयों के कारण उगाना मुश्किल है, किंतु संस्थान द्वारा विकसित तकनीक से यह प्रयास सफल हो सकते हैं । साथ ही स्थानीय विद्यार्थियों, लोगों व पर्यटकों को लाहौल व शीत मरुस्थल की प्रजातियों की जानकारी के लिए अरबोरेटम स्थापित किया जाएगा । निदेशक हि व अ सं, शिमला ने इन कार्यों में वन मंडल लाहौल के साथ काम करने का आश्वासन दिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाहौल और स्पीति जिला के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया । कार्यक्रम का समापन डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान के धन्यवाद प्रसात्व के साथ हुआ ।

Glimpses of the Programme

Media Coverage

अनूठी पहल..... हिमालयन वन अनुसंधान संस्था ने वन विभाग के सौजन्य से दी एक दिन की ट्रेनिंग, कर्मचारियों ने जानी जूनिपर-भोजपत्र की नर्सरी की तकनीक

शुक्पा पर कामयाब रही रिसर्च, हजारों पौधे तैयार

कार्यालय संवाददाता-कुल्लू

हिमालयन वन अनुसंधान संस्था शिमला ने वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से रविवार को केलांग, लाहुल और स्पीति में वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों के लिए सतत विकास और आजीविका के लिए वानिकी प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डीएफओ लाहुल अनिकेत शर्मा ने संस्थान से आग्रह किया कि संस्थान वन विभाग के कर्मचारियों को जूनिपर के अलावा भोजपत्र और बिलों की बीज कलेक्शन तकनीक एवं उसकी नर्सरी पर ट्रेनिंग दें। लाहुल वन विभाग की नर्सरीयां अलग-अलग भौगोलिक स्थान पर हैं। उनके अनुरूप जूनिपर उगाने की उचित तकनीक बताने का भी आग्रह किया। उन्होंने लाहुल में अरबोरेटम स्थापित करने की आवश्यकता बताई और कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान इसमें वन विभाग को तकनीकी सहायता दें। उन्होंने बिलो मोटोलिटी के बारे में भी चिंता जाहिर की। निदेशक डा.संदीप शर्मा ने बताया कि संस्थान द्वारा भी सैलिक्स में पिछले दो दशकों से मोटोलिटी देखी जा रही है। इसके विभिन्न कारण हैं। संस्थान इस प्रजाति की डिजीज प्रतिरोधक नई प्रजातियां विकसित करने पर काम कर रहा है और आशा जताई कि आने वाले समय में यह नई प्रजातियां

कुल्लू: हिमालयन वन अनुसंधान संस्था के शिविर के दौरान अधिकारी सामूहिक चित्र में

विकसित होगी। उन्होंने बताया कि उनका संस्थान वन मंडल लाहुल में अरबोरेटम स्थापित एवं विकसित करने के लिए वन विभाग को पूर्ण तकनीकी सहयोग करेगा। उन्होंने ट्रान्स हिमालय की जूनिपर एवं अन्य पौधे एवं झाड़ियों का अरबोरेटम स्थापित करने का सुझाव दिया। उन्होंने उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी और वृक्षारोपण तकनीक विषय पर जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि पौधरोपण की सफलता के लिए सही और स्वस्थ पौध का चयन और पौधरोपण तकनीक बहुत महत्वपूर्ण होती है। वैज्ञानिक डा. पीतांबर सिंह ने जूनिपेरस पॉलीकार्पस (शुक्पा) एवं भोजपत्र की नर्सरी और पौधारोपण तकनीक पर प्रस्तुति दी और शीत मरुस्थल के महत्वपूर्ण वृक्ष शुक्पा का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि जूनिपेरस पॉलीकार्पस मूल रूप से हिमाचल प्रदेश एवं लद्दाख के आंतरिक शुष्क एवं शीत मरुस्थल क्षेत्र में पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश मे इसके वन 210 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है। शुक्पा शीत मरुस्थल की पारिस्थितिकी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इन क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों द्वारा विभिन्न धार्मिक संस्कारों को करने के लिए शुक्पा को पत्तियों का मंदिरों और मठों में धूप के रूप में उपयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि इसकी नर्सरी तकनीक उपलब्ध नहीं थी, उनके संस्थान ने इस पर शोध किया और इसकी पहली बार नर्सरी विकसित कर हजारों पौधे विकसित किए और हितधारकों को बांटे गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हिमाचल प्रदेश एवं लद्दाख वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों और किसानों को शुक्पा की नर्सरी तकनीक सिखाई गई है। इसके अलावा उन्होंने भोजपत्र की बीज और वर्धन तकनीक के बारे में भी बताया। वैज्ञानिक डा. जगदीश सिंह ने ध्विविधीकरण और सतत आय सृजन के लिए महत्वपूर्ण शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती विषय पर व्याख्यान दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाहुल और स्पीति जिला के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डा. जोगिंद्र सिंह ने छरमा, का शीत मरुस्थल में पारिस्थितिकी के महत्व के बारे में जानकारी दी।

2,500 मानसिक रोगी मिले हैं। इनमें ज्यादातर मरीज उपचार और काउंसलिंग के उपरांत स्वस्थ हो सकते हैं।

लक्षण दिखने पर मरीज चिकित्सक से परामर्श करें।

बताया कि रविवार को सभी आरोपी अदालत में पेश किए गए। संवाद

स्वास्थ्य मिशन का प्रयोगशाला स्थापित की जाएगी। इसके लिए

जूनिपर उगाने की बताई उचित तकनीक

केलांग में वन विभाग के कर्मचारियों ने जानी जूनिपर और भोजपत्र नर्सरी का तरीका

संवाद न्यूज एजेंसी

केलांग (लाहौल-स्पीति)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने वन विभाग के सहयोग से रविवार को केलांग में कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें वन कर्मचारियों को वनमंडलाधिकारी केलांग अनिकेत ने जूनिपर, भोजपत्र और बिलों की बीज कलेक्शन तकनीक एवं उसकी नर्सरी के बारे में बताया।

कहा कि लाहौल में वन विभाग की नर्सरियां अलग-अलग भौगोलिक स्थान पर हैं। ऐसे में वन कर्मियों को जूनिपर उगाने की उचित तकनीक बताई गई।

संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि संस्थान नई प्रजातियां विकसित करने पर काम कर रहा है। उन्होंने उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी और पौधरोपण तकनीक विषय पर जानकारी साझा की।

कहा कि पौधरोपण की सफलता के लिए सही और स्वस्थ पौध का चयन और तकनीक बहुत महत्वपूर्ण होती है।

केलांग में वन विभाग के कर्मचारियों को जूनिपर और भोजपत्र की जानकारी देते अधिकारी। स्रोत : वन विभाग

डॉ. पीतांबर सिंह ने जूनिपर (शुक्पा) एवं भोजपत्र की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक पर प्रस्तुति दी। शीत मरुस्थल के लिए जूनिपर (शुक्पा) को सबसे उचित बताया। जूनिपर मूल रूप से हिमाचल प्रदेश और लद्दाख के आंतरिक शुष्क एवं शीत मरुस्थल क्षेत्र में पाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में इसके वन 210 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है। डॉ. जोगिंद्र चौहान ने छरमा की शीत मरुस्थल में पारिस्थितिकी के महत्व के बारे से अवगत करवाया। एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाहौल-स्पीति जिले के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

लाहुल में स्थापित किया जाएगा अर्बोरेटम : डा. संदीप

जागरण संवाददाता, केलंग : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से प्रदेश वन विभाग के सौजन्य से केलंग में वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों ने लिए सतत विकास और आजीविका के लिए वानिकी प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने इसमें शिरकत की। उन्होंने कहा कि लाहुल में विद्यार्थियों, लोगों व पर्यटकों को लाहुल व शीत मरूस्थल में पेड़ पौधों की प्रजातियों की जानकारी के लिए अर्बोरेटम स्थापित किया जाएगा। एक दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान की ओर से कर्मचारियों को जूनिपर के अलावा भोजपत्र और बिलो की बीज कलेक्शन तकनीक एवं उसकी नर्सरी के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही बिलो मोर्टालिटी के बारे में भी चिंता जाहिर की। डा. पीतांबर सिंह विज्ञानी ने जूनिपेरस पाली कार्पस (शुक्पा) एवं भोजपत्र की नर्सरी और पौधारोपण तकनीक के बारे में बताया। डा. जगदीश सिंह विज्ञानी ने विविधीकरण और सतत आय सृजन के लिए महत्वपूर्ण शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर डा. जोगिंद्र चौहान, वन खंड अधिकारी लाहुल स्पीति अनिकेत सहित अन्य विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से केलंग में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान वन विभाग के कर्मियों के साथ संस्थान के पदाधिकारी ● जागरण

****